Self Respect

28-08-2014

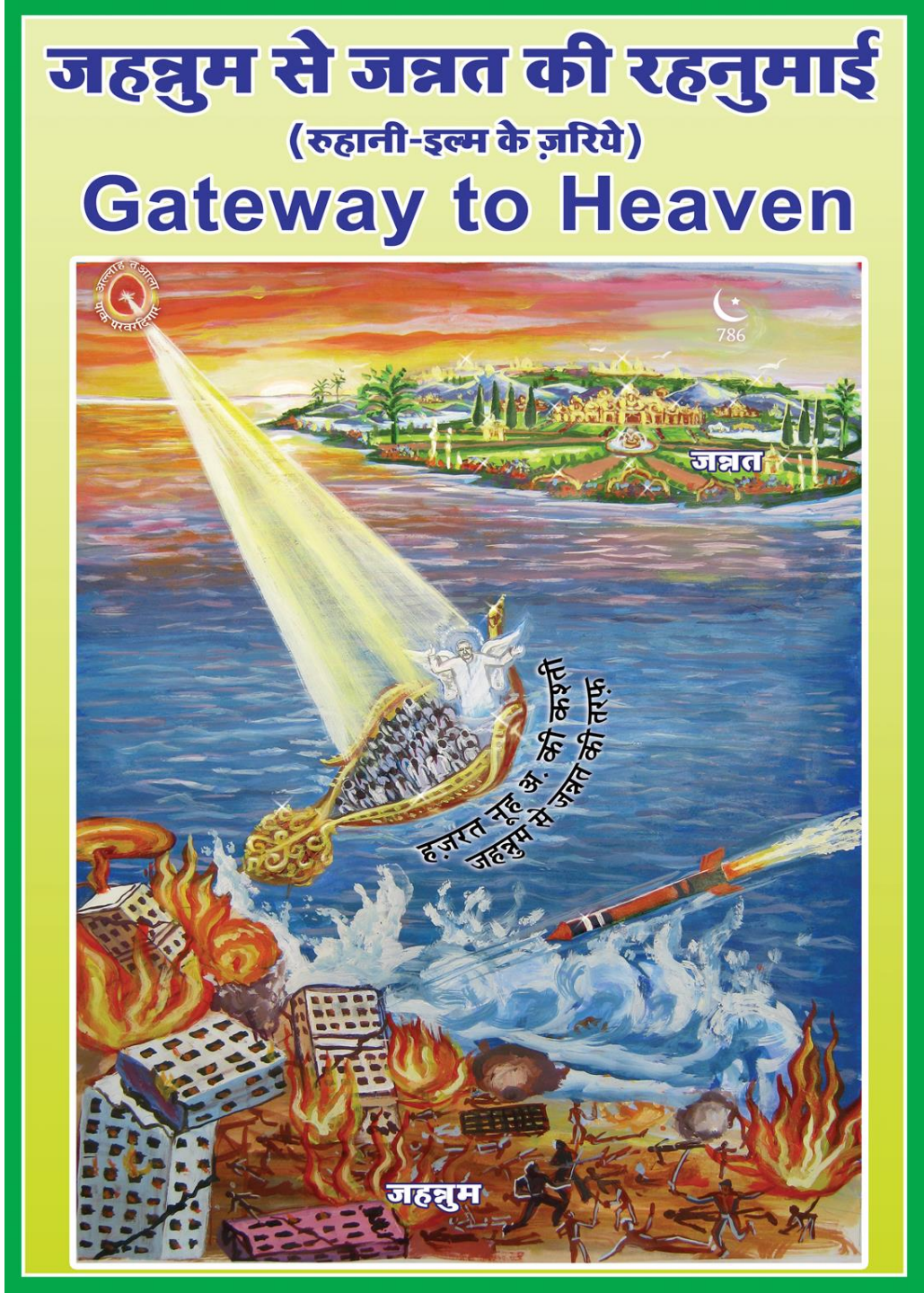

- ✓ मीठे-मीठे रूहानी बच्चों प्रति बाप बैठ समझाते हैं । अब तुम बच्चों के लिए बाप कहते हैं तुम कितने ऊंच थे । उत्थान और पतन का यह खेल है । तुम्हारी बुद्धि में अब है कि हम कितने उत्तम और पवित्र थे ।
- ✓ वहाँ तुम्हारा राज्य था जो फिर अब स्थापन कर रहे हैं । बाप सिर्फ इशारा देते हैं कि तुम बहुत उत्तम शिवालय सतयुग के निवासी थे फिर जन्म लेते-लेते अन्त में तुम विकार में गिरे तो पतित विशश बने ।
- ✓ तुम यहाँ बैठे हो तो बुद्धि में रहना चाहिए कि हम शिवालय में विश्व के मालिक थे । दूसरा कोई धर्म ही नहीं, सिर्फ हमारा ही राज्य था फिर 2 कला कम हुई । ज़रा-ज़रा कला कम होते, त्रेता में 2 कला कम हो गई ।

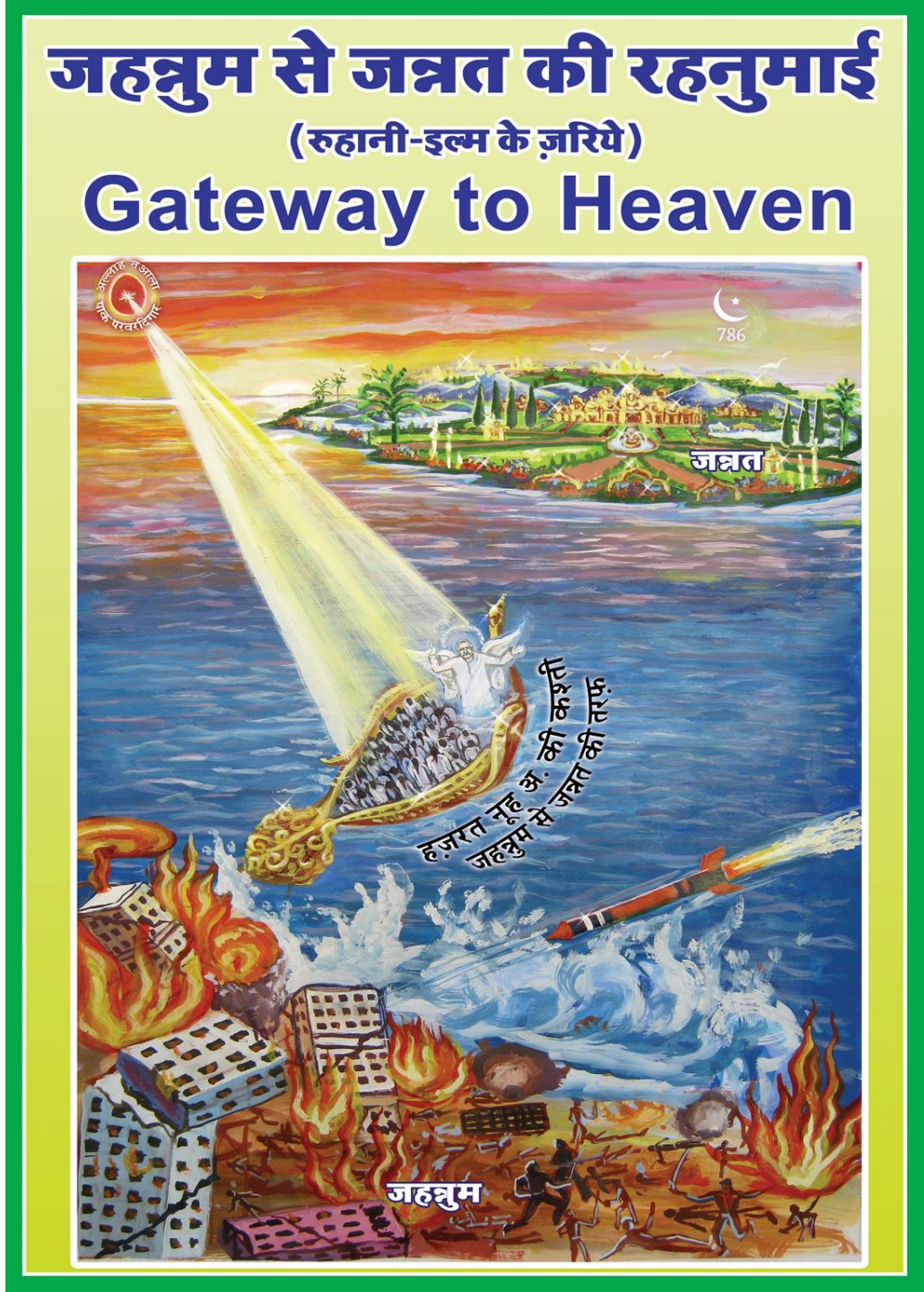

- ✓ तुम सारे वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी को, अपने 84 जन्मों की कहानी को भी समझ गये हो ।
- ✓ शिवबाबा ने आकर देवी-देवता धर्म की स्थापना की । यह तो सदैव याद रखना चाहिए । खुशी की बात है ना । अभी हम फिर शिवालय में जाते हैं ।
- ✓ कोई मरता है तो कहेंगे स्वर्ग गया । परन्तु ऐसे कभी कोई जाता नहीं । यह सब भक्ति मार्ग के गपोड़े हैं - दिल खुश करने के लिए । सच-सच हेविन में तो अभी तुम जाने वाले हो । वहाँ कोई रोग आदि होते नहीं । तुम सदैव हर्षित रहते हो ।

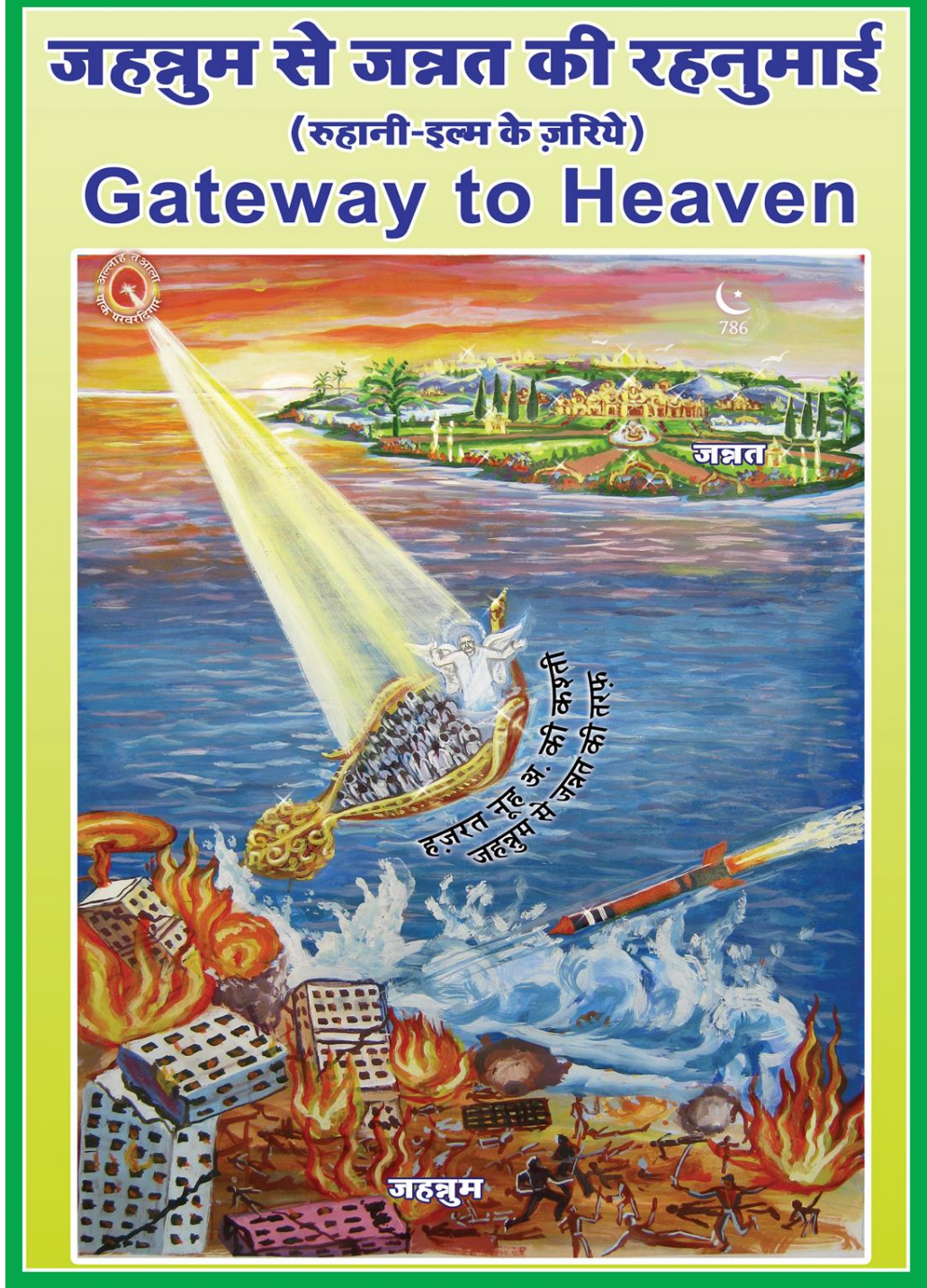

- ✓ स्पिरिचुअल नॉलेज तो स्पिरिचुअल फादर ही दे सकते हैं । खुद कहते हैं मैं तुम्हारा स्पिरिचुअल फादर हूँ । ज्ञान का सागर हूँ । तुम बच्चे भी बाप से सीख रहे हो । ज्ञान को धारण कर रहे हो । फिर पिछाड़ी में बाप मिसल बन जायेंगे । सारा मदार धारणा पर है । फिर वह ताकत आ जायेगी, बाप की याद से ।

- ✓ पुरूषार्थ तो जरूर करना होता है, एम आबजेक्ट तो सामने खड़ी है । यह चैतन्य में थे, जिनका जड़ चित्र बनाया है । बाप आया है पावन बनाने, नर से नारायण बनाते हैं । तुम भी उन्हों की राजधानी में थे । फिर ऐसा बनने का पुरूषार्थ करते हो तो अच्छी रीति फालो करना चाहिए ।

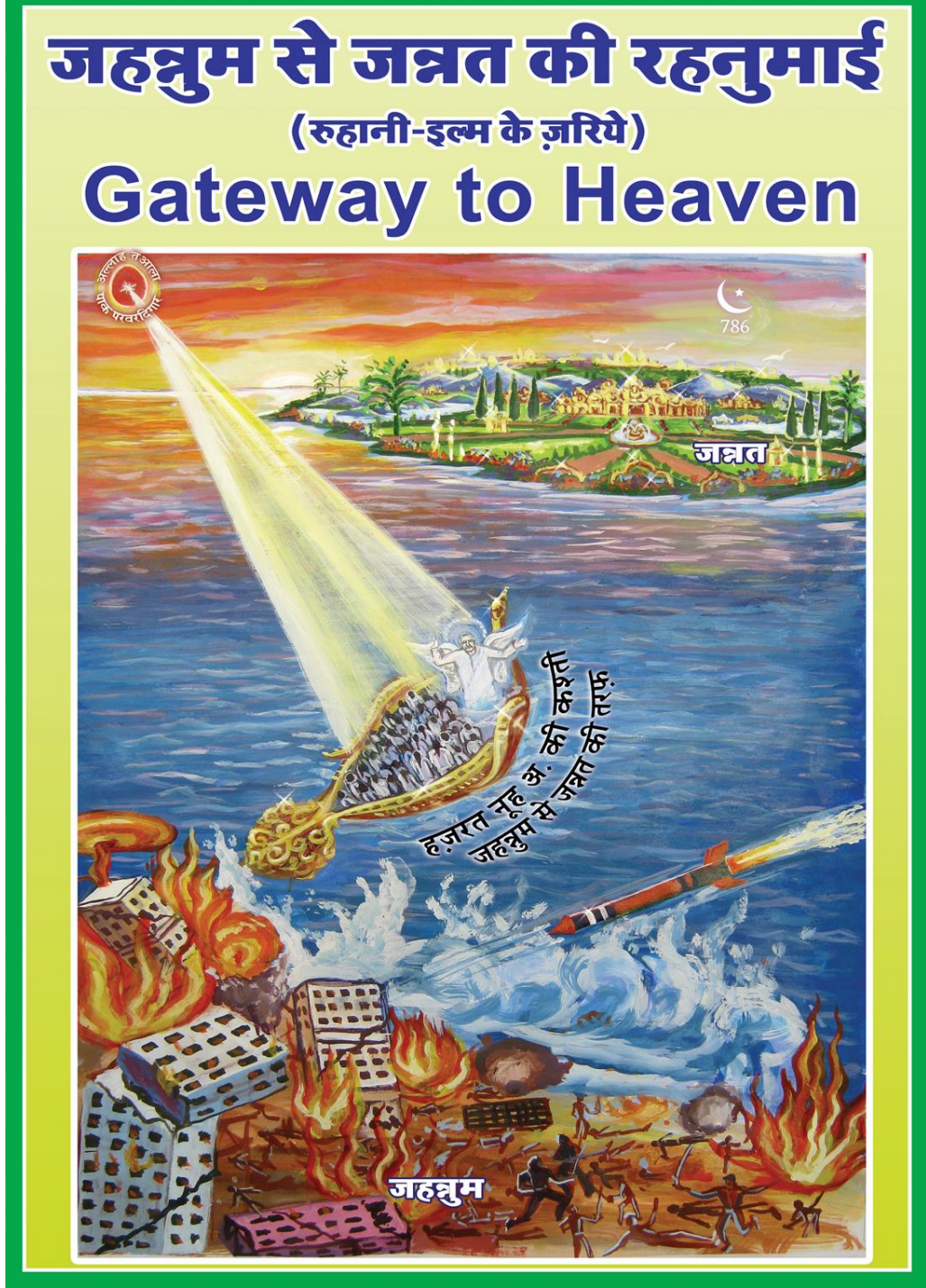

- ✓ तुम पावन होंगे तो पावन दुनिया स्थापन हो ही जायेगी । यह पतित दुनिया ही खलास हो जायेगी ।

- ✓ मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमोर्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते ।

- ✓ वरदान:मन और बुद्धि को व्यर्थ से मुक्त रख ब्राह्मण संस्कार बनाने वाले स्वराज्य अधिकारी भव !